Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue September 2021 | Impact Factor 4.765

भारतीय पत्रकार एवं पत्रकारिता: दशा और दिशा

लीना गोयल
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सनातन धर्म कॉलेज, अम्बाला छावनी

सारांश

पत्रकारों और उनकी पत्रकारिता को एक वीर योद्धा से कम नहीं आंका जा सकता। इनकी कलम देश समाज में फैली अनेक बुराइयों से निपटने की ताकत रखती है। इतिहास गवाह है कि देश के अंदर बड़ी बड़ी क्रांतियां पत्रकारों की पत्रकारिता से ही घटित हुई है। पत्रकारों की पत्रकारिता का एक-एक शब्द किसी देश समाज एवं उसके विकास के ना केवल दिशा और दशा तय करता है बल्कि उन्हें एक निश्चित गति भी प्रदान करने में सहायक होता है। यह पत्रकार अपनी जान जोखिम में डालकर भ्रष्टाचार विहीन समाज बनाने में सहायक होते हैं। लेकिन वर्तमान में यह शब्द कहां तक सार्थक है हम सभी जानते हैं। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। समाज की विडंबना है कि कल तक छपकर बिक ने वाला अखबार वर्तमान में बिक कर छपता है।कल तक देश, समाज के निर्माण में अहम भूमिका निभाने वाली पत्रकारिता कॉरपोरेट सेक्टर के रूप में विकसित हो रही है। पत्रकार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से व्यवसाय शुरू कर अपनी साख बनाने में जुट गए हैं। इनके अपने-अपने प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हाउस खुल गए हैं। आज पत्रकार, पत्रकारिता देश, समाज के लिए नहीं बल्कि अपने मालिक के लिए कर रहा है। एक समय था जब समाचार पत्र में छपी चार पंक्तियां समाज की दिशा और दशा तय करने के साथ-साथ उस पर कार्यवाही भी करती थी। परंतु वर्तमान में समाचार पत्र का एक पूर्ण पृष्ठ भी किसी समाज पर कोई प्रभाव नहीं डाल पाता। यह देश की प्रगति और दशा के शुभ संकेत नहीं हो सकते।

भूमिका

वर्तमान मीडिया जिसके महत्व से हम सब परिचित हैं वर्तमान में हमारे सामने कई प्रश्न खडे करता है क्योंकि यह एक अकेला ऐसा साधन है जो मानवीय व्यक्तित्व के समग्र ज्ञान को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। परन्तु प्रश्न यह है कि वर्तमान में बहुत सी

PURVA MIMAANSA

पत्र-पत्रिकाएं मात्र फ़ाइल कॉपी का जुगाड़ करके ही अपनी रोटी-रोजी चला लेती हैं किन्तु, जिनके अंदर कहीं मीडिया बची हुई है, वह आखिर क्या करें? अब तो दलाली और ब्लैकमेलिंग' जैसे शब्द, दुर्भाग्य से इस पेशे की पहचान बन चुके हैं! यह चलन आम हो गया है और फिर इसमें क्या किया जा सकता है, इस बात का किसी के पास शायद ही जवाब भी नहीं है कई लोग वेबसाइट, ब्लॉग इत्यादि को देखकर थोड़ी उम्मीद जगाते हैं कि 'शायद मीडिया और लेखन' को कोई राह मिल जाए! किन्तु इस राह में भी कम मुसीबतें नहीं हैं जैसे बढ़ता खर्च, तकनीकी झोल और यूनीक कंटेंट की कमी सबसे बड़ी मुसीबत के तौर पर सामने आ खड़ी होती है।

मीडिया क्षेत्र में गिरावट का कारण: दिशा का अभाव, कॉर्पोरेट घरानों का कब्ज़ा, प्रिंट मीडिया की गिरती अहमियत और इन सबसे बढ़कर छोटे-मध्यम दर्जे के अख़बारों के साथ पत्रकारों की कमाई के साधन कम हो जाना, जैसे विषय इस क्षेत्र के लोगों को परेशान किये हुए हैं। आज झाखिर कौन अपने बेटों को इस क्षेत्र में लाना चाहता है? थोड़ा व्यापक रूप से गौर किया जाए तो इस क्षेत्र में जो कठिनाइयां आयी हैं, उनका बड़ा कारण तकनीक की समझ और उसके प्रयोग को लेकर नज़र आता है। यह तो हम सब जानते है कि मानवीय व्यक्तितत्व के समग्र विकास एवं ज्ञान की सीमाएं बढ़ाने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हमे किसी भी विषय को सारे दृष्टिकोणो से देखने की सुविधा मिले । किताबें, पत्रिकाएं, समाचार पत्र टेलिविजन रेडियो , व्याख्यान एवं खुली बहस सभी माध्यमों से विचारों का आदान प्रदान सम्भव है। यह सभी माध्यम वर्तमान में सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभाजित किए जाते हैं प्रिंट मीडिया एवम् इलैक्ट्रानिक मीडिया।

इलैक्ट्रानिक मीडिया के अन्तर्गत रेडियो, दूरदर्शन, दूरभाष, टेलिग्राम, सिनेमा, चलचित्र, फैक्स, स्पीकर, केबल, इनरनैट इत्यादि आते हैं तथा प्रिंट मीडिया में लेखन मीडिया को स्थान प्राप्त है। यह मीडिया सबसे प्राचीन मीडिया है जो वर्तमान और भविष्य में भी महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रहेगा। मीडिया शब्द की व्युत्पत्ति 'पत्र' से हुई है जिसका आशय है सूचना या संदेश प्रेषित करने वाला उपकरण। जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों तक पंहुचानें का कार्य करता है।

ऐतिहासिक पुस्तकें बताती है कि इस सूचना देने वाले पत्र का आरम्भ 1674 में भारत में बम्बई में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने किया। 1772 में मद्रास में 1779 में

कलकत्ता में भी समाचार पत्र निकाला गया। यह भी कहा जाता है कि सर बिलियम बोल्टस नामक अग्रेंज व्यक्ति ने तो ईस्ट इंडिया कम्पनी की नौकरी छोड़ कर समाचार पत्र निकालने का प्रयत्न किया था। परन्तु 1780 में जेम्स आगस्टस हिकी ने 'बंगाल गजट" नामक समाचार पत्र निकाला। इस पत्र को भारत का पहला समाचार पत्र कहा गया तथा हिकी को भारतीय समाचार पत्र जगत का पितामह कहा गया। इस प्रकार समाचार पत्र का प्रचार प्रसार होने लगा। परंतु पत्रों के प्रचार-प्रसार को नियत्रित करने के लिए लार्ड वेलेजली ने 1799 ई. में मद्रास से कलकत्ता के सर अल्फ्रेड क्लार्क को लिखा कि- " मैं सम्पादकों के आचरण को नियंत्रित करूगाँ। शरारतपूर्ण प्रकाशनों को बंद करना उत्तम है यदि कोई नहीं मानता तो उसे यूरोप भेज दिया जाए।"

जेम्स सिल्क बकिंघम जो 'कलकत्ता जर्नल' के सम्पादक थे। उन्होनें अपनी प्रतिभा से मीडिया में तेजस्विता का संचार किया। उनके अनुसार सम्पादक का कर्त्तव्य " गवर्नरों को उनके कर्तव्यों से सावधान करना उन्हें उनके दोषों के बारे में उम्रता से चेतावनी देना और अप्रिय सत्य प्रकट करना था 13 राजा राम मोहन राय ने 1821 में बंगला साप्ताहिक 'सम्वाद कौमुदी' नामक समाचार पत्र निकाला। अधिक व्यापकता के लिए उन्होंने फारसी में मीरात-उल-अखबार निकाला। इसके माध्यम से मीडिया के लक्ष्यों की ओर संकेत करते हुए राजाराम मोहन राय ने कहा कि मेरा सिर्फ यही उद्देश्य है कि मैं जनता के सामने ऐसे पत्र उपस्थित करू जो उनके अनुभव को बढाए और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हो सकें। मेरे पत्र आम जनता के लिए माध्यम बन सही और विस्तृत सूचना एक जगह से दूसरी जगह तक पंहुचा सकें। सही गलत का आंकलन कर सकें। काल्पनिकता से मनुष्य को यथार्थता के धरातल पर ला सकें। इस उत्तरदायि का जिम्मा उठाना होगा पत्रकार को पत्रकार वो जो मीडिया के माध्यम से सच झूठ का खुलासा करे और देश-विदेश के समाचार जनता तक पत्र के माध्यम से पंहुचाएं। इस दिशा में जो लोग कार्य कर रहें हैं उनकी प्रगति का ब्यौरा सामने नहीं आता क्योंकि उनकी भूमिका उस व्यक्ति की तरह हैं जो पर्दे के पीछे रह कर कार्य करता है। यह एक ऐसा गम्भीर काम है जो एकान्त में सावधानी पूर्वक होता है परंतु उसका लाभ सबको मिलता है इसलिए पत्रकार को 'सत्य के दूत की संज्ञा दी जा सकती है । जिस प्रकार प्राचीन काल में दूत भी निर्भयता से एक सूचना शत्रु के शिविर तक जैसे का तैसा

PURVA MIMAANSA

पहुंचाता था वह इस जोखिम भरे कार्य को पूरी ईमानदारी के साथ करता था। वैसे ही पत्रकार का कार्य जोखिम भरा होता है। उसकी सूचना यदि किसी के लिए लाभ का साधन बनती है तो किसी के लिए हानि का कारण भी बन सकती है। परतुं पत्रकार इसकी चिंता किए बिना अपना कार्य सम्पन्न करता है।

प्रारम्भिक मीडिया के पत्रकारों के आदर्श महान् थे और साधन सीमित। वो कष्ट और यातनाओं को सहते रहने के बावजूद अपने हौंसले बुलन्द रखते और कर्त्तव्य से डिगते नहीं थे। खादी का कुरता पजामा कंधे पर लटका झोला उसकी पहचान थी, हथियार था कलम। जो किस पर और कहां चलेगी उसका पता किसी को भी मालूम न पडता था। मीडिया की चर्चा करते ही पत्रकार की यह तस्वीर सभी की आंखों में झूल जाती है आधुनिक काल में भी मीडिया कला का विकास हो रहा है। परंतु क्या आज हम मीडिया एवं पत्रकारों से संतुष्ट है ? इस प्रश्न के उत्तर के लिए हमें यह समझना होगा कि पत्रकार की दशा क्या थी और वर्तमान में यह किस दिशा में विकसित हो रही है।

संक्षेप में कहा जाए तो पहले मीडिया का उद्देश्य सामान्य और असामान्य घटनाओं को जनता तक पहुंचाना था। या यूं कहे कि सामान्य लोगों के विशेष समाचार या विशेष लोगों के सामान्य समाचार । पत्रकारों के लिए दोनों का मोल बराबर था।" दर्शन और श्रवण से उत्पन्न अनुभूतियों को लिपिबद्ध करना, घटनाओं का सजीव एवं रोचक, स्पष्ट, सरल, सत्य और साक्षर चित्रण करण तब तक सम्भव नहीं है जब तक पत्रकार अपनी कलम का धनी न हो।

जनता के जीवन में प्रारम्भ से लेकर आज तक मीडिया का बड़ा महत्व रहा है। उसके रूप चाहे कुछ भी रहें हो। भारतीय पत्रकार अपनी देशभक्ति, निष्ठा, लगन और ईमानदारी के लिए विख्यात रहे हैं। उनके आदर्श महान होते थे परंतु वर्तमान में इनके आदर्श छोटे हो गए हैं स्वतंत्रता से पूर्व स्वाधीनता के लिए संघर्ष करना उनका कर्त्तव्य था। उन्होने अपने आदर्शों के लिए मीडिया को अपनाया। धन कमाना या नाम कमाना उनका मकसद नही था

बाबूराव विष्णु पराडकर, आचार्य देवीदत्त शुक्ल, लक्ष्मी शंकर व्यास, प. दुर्गाप्रसाद, प. युग्लकिशोर शुक्ल, गणेश शंकर विद्यार्थी, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी,

शिवपूजन सहाय इत्यादि ऐसे कई नाम हैं जिन्होंने आदर्श मीडिया को अपनाया एवं समाज को नई दिशा दी। इन सबके बारे में ऐसे अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जिससे उनके अथक परिश्रम एवं निष्ठा का ज्ञान होता है। पत्रकार केवल समाचार ही नहीं लिखता बल्कि समाज को नई दिशा भी देता है। सूर्य की रोशनी की तरह समाज को राह भी दिखाता है परंतु क्या आज हम ऐसे पत्रकारों की खोज कर सकते हैं जो पत्र के ग्राहक बनाने के लिए या उसमें अच्छी सामग्री एकत्र करने के लिए विशेष योगदान दे रहे हों। वर्तमान का पत्रकार केवल अपना वेतन, अपने कालम और अपने स्वार्थ को ध्यान में रखकर चलता है। क्या यह आदर्श मीडिया का रूप है ?

भारत में मीडिया के वर्तमान स्वरूप को देखा जाए तो हमें उस समय की स्थिति का भी ज्ञान होता है जब एक प्रत्रकार बिना लाइसेंस के किसी तरह का प्रकाशन नहीं कर सकता था। ब्रिटिश सरकारी अधिकारी के निरीक्षण के बिना प्रकाशन नहीं कर सकता था। सरकारी अधिकारियों की प्रतिष्ठा के विरुद्ध नहीं लिख सकता था। इस प्रकार की विपरीत परिस्थितियों में पत्रकारों के लिए जेल के दरवाजे खुले रहते थे। इसलिए वही लोग मीडिया में आते थे जिनके ह्रदय में देश के लिए कुछ करने की तडप होती थी। उस समय के स्मरणीय पत्रकार लक्ष्मण नारायण गर्दे का कहना था कि "हमारे समय के अधिकांश हिन्दी पत्रकार इस क्षेत्र में केवल इसलिए आए कि वे देश के लिए कुछ करना चाहते थे। अनेक कठिनाईयों में हमे प्रेरित करने वाली एक चीज थी वह थी हमारी स्पिरिट" ।

आजादी से पूर्व मीडिया की दिशा देश की आजादी के लिए अंग्रेजी शासन के विरुद्ध क्रांति जगाना था। उसकी स्थिति एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी की भूमिका निभा रही थी। उस समय के नेता किसी न किसी रूप में अखबारों से जुड़े थे और अपनी बात जनता तक मीडिया के माध्यम से पहुंचाते थे। गांधी, नेहरू जेसै नेता इसी श्रेणी में आते हैं। नेहरू कहते थे कि "मैं मीडिया को रणभूमि से भी अधिक बडी चीज समझता हूं । यह कोई पेशा नहीं बल्कि पेशे से भी कोई ऊंची चीज है। यह एक जीवन है, जिसे मैंने अपने को स्वेच्छापूर्वक समर्पित किया गांधी जी कहते थे मीडिया का एक उद्देश्य जनता की इच्छाओं विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है, दूसरा जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना व तीसरा सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।

PURVA MIMAANSA

पत्रकार भावुक होता है परंतु नए परिवेश में उसे चतुर होना पड़ेगा। भ्रष्टाचार पक्षपात लालफीताशाही सत्ता के दुरुपयोग और अव्यवस्था के खुले विरोध द्वारा पत्रों को जन-सामान्य के हितों को सुरक्षित रखना है। मीडिया आज के नागरिक का अभिन्न अंग बन चुकी है । जागरूक नागरिक वर्तमान में सभी विषयों पर अपनी दृष्टि रखना चाहता है इसलिए वह मीडिया के प्रत्येक रूप को ध्यान से देखता है। जैसे पुराने समय में जहाँ हुक्का ताश पड़ी होती थी वहां दो चार व्यक्ति जरुर इकट्ठे हो जाते थे। ठीक उसी तरह आजकल मीडिया सबका केन्द्रबिन्दु बन गया है। एक छोटी सी भी घटना के घटित होने पर सभी मीडिया से चिपक जाते हैं।

मीडिया आज के युग का लोकगुरु हैं। ये आम आदमी को उसके कर्तव्यों का बोध करवाता हैं। शासक वर्ग को सतर्क करता है। देश के स्वाधीनता संग्राम से लेकर कारगिल के युद्ध तक लोगों में चेतना जाग्रत करता है। इस प्रकार इसमें कोई शंका नही रह जाती कि मीडिया समाज को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। परन्तु यह विचार करने का विषय है कि मीडिया का बदलता चरित्र किस सीमा तक निष्पक्ष रह कर निस्वार्थ भाव से अपने आप को इस कार्य में सुढ बनाए रखेगा।

संदर्भ सूची

हिकीज बंगाल गजट. 29 जनवरी 1780, हिन्दी मीडिया, कृष्ण बिहारी मिश्र

Barns, Margarita. The Press in India. p. 67.

चलपतिराव समाचार पत्र पृ. 27.

हेमेन्द्र प्रसाद घोष: द न्यूज पेपर इन इंडिया. पृ. 25-26 5. नंद किशोर त्रिखा समाचार संकलन और लेखन, पृ. 74

हिन्दी मीडिया: दशा और दिशा. जय प्रकाश भारती

PURVA MIMAANSA